मार्लबोरो हिन्दी स्कूल पत्रिका दिसम्बर २०२०

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

हमारे प्रिय डॉ वेद चौधरी अब नहीं रहे। शुक्रवार, 5 फरवरी 2021 के दिन वेद जी अपना शरीर त्याग कर स्वर्ग सिधार गये। वेद जी का जन्म 5 जनवरी 1942 को भारत के उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के ददोरा गाँव में हुआ था। वे 1965 में उच्च अध्ययन के लिए अमेरिका आए, और 1970 में पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की । वेद जी आजीवन प्रखर बुद्धि के व्यक्ति थे । बेल लेबोरेटरीज में तीस वर्षों के लिए संचार अनुसंधान के क्षेत्र में काम किया। इसके बाद, न्यू जर्सी के गवर्नर कॉर्ज़िन ने उन्हें पर्यावरण सुरक्षा विभाग में सहायक आयुक्त नियुक्त किया और 2010 में सेवानिवृत्त हुए । उन्होंने पूर्व में रटगर्स विश्वविद्यालय ट्रस्टी के रूप में; नागरिक अधिकार समिति के उपाध्यक्ष रूप में; न्यू जर्सी गवर्नर की जातीय सलाहकार परिषद के सदस्य के रूप में; और कई अन्य प्रशासनिक पदों पर कार्य किया।

डॉ चौधरी ने विशेष रूप से भारतीय संस्कृति, हिंदी और हिंदू धर्म को बढ़ावा देने में अपने समुदाय पर एक अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने ईशा (Educators' Society for the Heritage of India) की स्थापना की जिसके अंतर्गत 10 साल समर कैंप का निर्देशन किया । उन्होंने डॉ बिशन अग्रवाल के साथ मार्लबोरो हिंदी स्कूल की स्थापना की । संपूर्ण जीवन उन्होंने सामुदायिक सेवा की, अगर मैं उनके बारे में लिखूंगा तो शायद पूरा समाचार पत्र पर्याप्त नहीं होगा ।

मेरी नज़रों में वो एक देवात्मा थे और मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ कि मुझे कई वर्षों तक उनके साथ काम करने का मौक़ा मिला। वेद जी, आपकी मधुर स्मृति, स्नेह आदर्श, मार्गदर्शन, आशीर्वाद हमारे लिये सदैव प्रेरणादायक रहेंगे। हम आपको कभी भी भूला नहीं पायेंगे ।

बृज गुप्ता

हमारे घर मे भारतीय त्योहार कैसे मनाते हैं

सभी पाठकों को नववर्ष की शुभकामनायें ! पत्रिका के इस अंक मे Advanced २ के छात्रों और peer mentors ने उनके मनपसंद त्योहार का विवरण किया है। ये त्योहार उनके घरों में कैसे मनाया जाता है, उसकी कुछ झलकियाँ दी हैं। आशा है आप इसका पूरा आनंद लेंगे |

छठ की पूजा

यह त्योहार होली जैसा रंगीन, दिवाली जैसा उज्जवल, और नवरात्रि जैसा सशक्त नहीं है| किन्तु यह मेरे पूर्वजों और परिवार का त्योहार है| यह छठ पूजा है|

हम सब अपने दिन-प्रतिदिन जीवन में इतना खो गए हैं कि ये भी नहीं सोचते कि मूल-भूत चीज़ों से दूर होते जा रहे हैं | किसी ने भगवान को देखा तो नहीं लेकिन अगर किसी एक शक्ति की बात करें, जो हम सब का जीवन चला रहे है, वो कौन है? सूर्य देव हैं? आप बताइए: आप अपने जीवन की कल्पना बिना सूर्य के कर सकते हैं?

इसी आस्था ने छठ पर्व को जन्म दिया है, जो बिहार, झारखंड, और पूर्व उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा त्योहार है | छठ पूजा चैत्र एवं कार्तिक मॉस में आती है | छठ शब्द संस्कृत के षष्ठी शब्द से लिया गया है अर्थात दिवाली के ठीक 6 दिन बाद | ये त्योहार चार दिन तक मनाया जाता है | पहला दिन नहाय-खाय, दूसरा दिन खरना,

तीसरा दिन संध्या अर्घ, और आख़िरी दिन उषा अर्घ से समाप्त होता है | इस पूजा में सूर्य देव, और उनकी बहन, छठी मइय्या, की उपासना होती है | इस त्योहार में महिलाएं चार दिन का उपवास करती हैं, और २४ घंटे में एक बार सूर्यास्त्र के बाद खाना खाती हैं | प्रसाद के तौर पर इसमें भगवान को ताज़ी सब्ज़ियाँ और फल चढ़ाये जाते हैं, और ठेकुआ मुख्य प्रसाद है | Wicker Basket, या सूप, में सारी पूजा सामग्री और प्रसाद रख कर लोग नदी के किनारे, घाट पर जाते हैं, और सूर्य देव का आशीर्वाद लेते हैं | इस पूजा में सारे सगे सम्बन्धी शामिल होते हैं | ये चार दिन भक्ति और उल्लास से भरे हुए होते हैं | बच्चे-बूढ़े सभी इसे प्रेम-पूर्वक मनाते हैं |

आइये, अब आपको बताएं कि हम इस पर्व को कैसे मनाते हैं | इस पूजा में विशेष-कर घर सफाई का बहुत महत्व है | इसलिए, मेरी मम्मी सभी दिन के काम निपटा कर सफाई में लग जाती है | फिर शाम को वो नहा-धो कर प्रसाद बनाती हैं | प्रसाद में पहले दिन लौकी की सब्जी, चने की दाल, और चावल बनाया जाता है, और आरती करने के बाद हम इसे प्रसाद-रुपी खाते हैं | दूसरे दिन मेरी मम्मी दिन भर व्रत कर शाम को खीर और पूड़ी प्रसाद के रूप में बनाती है | तीसरे दिन मम्मी ठेकुआ बनाती हैं, और दोनों सूप भी फल और सब्जियों से सजाती हैं | ठेकुआ एक बहुत ही कड़ी मिठाई है, जो पुए जैसी दिखती है | गुड़ को पानी में मिला कर एक घोल (syrup) तैयार करते हैं | इस घोल को गेहूँ के आटे में मिला कर गूँथते हैं | फिर

उस आटे को छोटी-छोटी लोई में काट कर पेड़े का आकार देकर उसे धीमी आँच पर सुनेहरा होने तक तलते हैं | फिर शाम को हम संध्या अर्घ के लिए बाहर निकलते हैं | डूबते सूर्य की छटा देखते ही बनती है | हम सब उनको जल अर्पित करते हैं और सूर्य देव से मंगल कामना करते हैं | चौथे और आख़िरी दिन, सुबह सूर्योदय का होता है | उस दिन हम सभी जल्दी से उठ कर सूर्योदय से पहले नहा-धो कर तैयार हो जाते हैं | फिर, सूर्योदय के समय बाहर निकल कर आख़िरी बार हम जल अर्पित कर उनको प्रणाम करते हैं | उसके पश्चात मम्मी हम सब को प्रसाद देती है | इस प्रकार हम अपना ये छठ पर्व पूर्ण करते हैं, और फिर अगले साल का इंतज़ार करते हैं |

अभी तक यह त्योहार सिर्फ बिहार और झारखंड में मनाया जाता था | अब, इसकी आस्था दूसरे राज्यों तक भी पहुंच रही है | मैं आशा करता हूँ की आपको छठ पूजा त्योहार के बारे में जानकर अच्छा लगा होगा | धन्यवाद |

-शरभ ओझा

होली के रंग

होली रंगों का त्योहार है| मेरे घर पर हर साल हम होली खेलते हैं| पापा, माँ, और बहन एक दूसरे के चेहरे पर तरह-तरह के रंग लगाते हैं| हर साल यह करने में बहुत मज़ा आता है| कभी-कभी, दोस्तों के साथ भी होली खेलते हैं|

इस दिन का मेरा पसंदीदा हिस्सा मिठाई है| हर त्योहार पर, मेरी माँ मिठाई बनाती या खरीदती है, और हम सब खाते हैं| इनके उदाहरण लड्डू और काजू कतली हैं| मेरी पसंदीदा मिठाई काजू कतली है|

होली के दिन हम सब कुर्ता भी पहनते है | मुझे कुरता पहनने मे बहुत मज़ा आता है | मेरे पास बहुत सारे रंग के कुर्ते हैं | हर साल कोई दूसरा कुर्ता पहनने मे मुझे अच्छा लगता है| यह पहन के हम लोग बहुत सारे फोटो लेते हैं|

और सबसे जरूरी काम, घर पर पूजा होती है| घर

के मंदिर के सामने में मेरा परिवार खड़े रहते हैं| कोई भजन गाते हैं, घंटी बजाते हैं, और प्रणाम करते हैं|

सब मिलाकर, होली बहुत मज़ेदार त्योहार है| रंगों के साथ खेलते हैं, मिठाई खाते हैं, अच्छे कपड़े पहनते हैं, और पूजा करते हैं| हर्ष का दिन होता है|

-प्रतीक झा

दिवाली की मिठाइयां

दिवाली एक भारतीय त्योहार है जो हिंदू धर्म में बहुत महत्वपूर्ण है। मेरा परिवार कार्तिक मास में दिवाली मनाता है। दिवाली मेरा सबसे प्रिय त्योहार है।

सुबह हम सभी नहाते हैं और दिवाली मनाने के लिए तैयार होते हैं। हम सभी घर को सजाते हैं। मेरी माँ काजू कतली, लड्डू, रसगुल्ला, और गुलाब जामुन जैसी स्वादिष्ट मिठाइयां बनाती हैं। हम घर को रंगोली, दिये, रंग बिरंगी लाइट और फूलों से सजाते हैं। हम दिये और पटाखे खरीदते हैं। हम पूजा के लिए थाली तैयार करते हैं।

शाम को हम लक्ष्मी पूजन करते हैं और उसके बाद स्वादिष्ट मिठाई खाते हैं। हम मंदिर भी जाते हैं और वहां प्रार्थना करते हैं। हम अपने दोस्तों से मिलते हैं और उन्हें दिवाली की शुभकामनाएं देते हैं। हम अपने बड़ों से आशीर्वाद लेते हैं। बाद में, हम घर आकर दीये जलाते हैं और स्वादिष्ट भोजन खाते हैं। उसके बाद, हम पटाखे जलाते हैं और हम एक-दूसरे को उपहार भी देते हैं।

मुझे दीवाली बहुत पसंद है क्योंकि यह साल का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। हम पूरे साल दिवाली का इंतजार करते हैं। दिवाली एक खुशी का त्योहार है।

-आयुष बोबरा

दीपों का त्योहार

दीपावली भारत के सबसे बड़े और सर्वाधिक महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। इसे दीपों के त्योहार के नाम से भी जाना जाता है । इसे एक नई शुरुआत और बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाते हैं। यह लोकप्रिय त्योहार लाखों हिंदू, जैन और सिख मनाते हैं । इस पांच दिन के त्योहार की शुरुआत धनतेरस से होती है, फिर आती है छोटी दिवाली, बड़ी दिवाली, गोवर्धन पूजा और भाई दूज ।

दिवाली वाले दिन हम घर की सफाई करते हैं और उसे सजाते है | मैं बहन के साथ दीयों को रंगती हूँ | माँ खूब सारी स्वादिष्ट मिठाई और पकवान बनाती है और परिवार और दोस्तों में बांटती हैं | इस दिन हम अच्छे और नए कपड़े पहनते हैं | शाम को सारा परिवार मिलकर लक्ष्मी और गणेश भगवान की पूजा करता है | पूजा के बाद हम दिये जलाते हैं और उनको घर के बाहर और अंदर रखते हैं| फिर खाने के बाद परिवार के साथ आतिशबाजी और फुलझड़ियां जलाने में बहुत मज़ा आता है।

दिवाली मेरा सबसे पसंदीदा त्योहार है | मुझे दिवाली का दिन बहुत अच्छा लगता है क्योंकि मुझे नए ड्रेस मिलती है और अच्छा खाना और मिठाई मिलती है | दिवाली हर्षोल्लास से भरपूर रंगीन होती है | यह वह दिन भी है जब मैं पैदा हुई थी, इसलिए यह मेरे लिए एक अतिरिक्त विशेषता रखता है। मुझे विस्तरित परिवार से मिलना और उन्हें दिवाली की शुभकामनाएं देना, और उन्हें उपहार और व्यवहार भेजना पसंद है। मेरी ओर से आप और आपके परिवार को दिवाली की शुभकामनाएं!

-अन्निका भाटिआ

हमारे घर का नवरात्रि उत्सव

परिचय

नवरात्रि एक बहुत लोकप्रिय त्योहार है। आइए जाने कि नवरात्रि उत्सव मेरे घर में और तमिलनाडु में किस प्रकार मनाया जाता है ।दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती देवी ने एक शक्ति बना नौ दिन और नौ रात उपवास और ध्यान किया और अंतिम दिन उस शक्ति ने महिषासुर

का संहार किया। यह नवरात्रि की कहानी है। नवरात्रि के पहले तीन दिन माँ दुर्गा देवी के लिये, दूसरे तीन दिन माँ लक्ष्मी देवी के लिये और आखिरी तीन दिन माँ सरस्वती देवी के लिये मनाते है।नवरात्रि के दौरान पूरे घर को सजाते हैं।

नवरात्रि के अंतिम दिन --- आयुध (शास्त्र और शस्त्र) पूजा मानते हैं | इस दिन की महत्वपूर्ण देवी सरस्वती माँ हैं। नवरात्रि के अंतिम दिन को अयुदय पूजा कहते है । हम घर में हर किताब और लैपटॉप को भगवान के सामने रखते हैं और बाद में उन पर चंदन और कुमकुम लगाते हैं । हम घडी, नल, फ्रिज, हीटर, दरवाज़ा पर भी चंदन और कुमकुम डालते है। हम भगवान के सामने रखे पुस्तक और लैपटॉप दूसरे दिन सुबह पूजा के बाद वापस उपयोग मे लाते हैं ।

विजयादशमी

नवरात्रि के बाद वाले दिन को विजयादशमी मानते हैं । इस दिन मेरे परिवार में बच्चों को स्कूल में डालते हैं । छोटे बच्चे के लिये एक अनुष्ठान होता है। छोटे बच्चों को एक प्रसिद्ध सरस्वती देवी के मंदिर ले जाते है। एक थाली लेकर उसमें चावल डालते हैं । एक वयस्क बच्चे को अपनी गोद में बिठा कर उसके हाथ से थाली में लिखवाते हैं।

गोलू

गोलू मेरे घर और तमिलनाडु में मनाया जाने वाला एक बहुत महत्वपूर्ण त्योहार है। इसको कोलू भी कहते हैं| मेरा परिवार अब गोलू नहीं करता है, पर जब हम भारत में रहते थे तब बहुत सारे ब्राह्मण परिवार मेरे परिवार को उनके गोलू को देखने के लिए आमंत्रित करते थे। अमेरिका में भी कुछ लोग हमे आमंत्रित करते थे। भले ही हम अब गोलू नहीं करते हैं पर पहले हमारी एक

परंपरा थी की हम मित्रों को अपने घर में हो रही पूजा को देखने, उपहार और प्रसाद लेने के लिये आमंत्रित करते थे। अगर उनको आने के लिये समय नहीं है तो हम उनके घर जा कर प्रसाद और उपहार देते थे। तमिलनाडु में ब्राह्मण और चेट्टियार जैसी जातियाँ गोलू अपने घर में बनाते हैं । वे गोलू बनाने के लिये बड़ी संख्या की पड़ी(स्तरों) बनाते हैं और उसपे कपड़ा डालकर उसके ऊपर बहुत सारी छोटी-छोटी गुड़ियाँ रखते हैं। निचले स्तर के मध्य में एक कलश रखते हैं जिसकी नौ दिन पूजा करते हैं I वे गोलू गुड़ियों को एसे रखते है कि जिससे एक कहानी बनती है। गोलू जीवन के विकास का प्रतीक है। ऊपर के तीन स्तरों में भगवानों की गुड़िया रखते हैं । दूसरे तीन स्तरों में ऋषियों, हिंदू कहानियों के वर्ण और मुनियों की गुड़ियाँ रखते हैं। तीसरे तीन स्तरों में भूलोक में रहने वाले लोगों की गुड़ियाँ रखते हैं। जैसे पोस्टमैन ,पुलिस, सैनिक, चेट्टियर और चेततीची का सेट, और छोटे शादी के सेट। ये गुड़ियाँ व्यक्तिगत हो सकती हैं या वे एक सेट का हिस्सा हो सकती हैं। जिसमें एक दृश्य या कहानी बनाने के लिए कई गुड़ियाँ होती हैं | उदाहरण के तौर पर बहुत से घरों में भारत माता की मूर्ति ,महात्मा गांधी जी की मूर्ति, अध्यापक और कक्षा के सेट और बहुत सारे देवताओं की मूर्तियाँ रखते हैं। गोलू गुड़िया हाथों से बनाते है। गोलू महत्वपूर्ण है क्योंकि इस के कारण लोग सामूहीकरण करते है और गोलू गुड़िया से कहानियों को याद करने के लिये मदद मिलती है।

दैनिक पूजा

हमारे घर में सब नौ दिन में नवरात्रि की पूजा करते हैं | हम मंत्र जाप और भगवान के भजन करते हैं, और फल, फूल और प्रसाद भगवान को चढ़ाते हैं I मेरी माता जी, हमारे सब मित्र और परिवार वालों को पूजा के लिये बुलाती हैं। हर शाम हम भगवान के भजन सुनते हैं। सब को बाँटने के लिए माता जी और पिता जी बहुत सारा प्रसाद बनाते हैं I हम अतिथियों को जाते वक्त प्रसाद और छोटे उपहार देते है जिसमें पान, फल, फूल, चूड़ियाँ , हल्दी और कुमकुम देते हैं |

प्रसाद

हर रात्रि नवरात्रि में हमारे घर मे मिठाई और शेव चूड़ा सुंडल बनाते हैं । हर रात्रि हम विभिन्न प्रकार के सुंडल बनाते है, यह मेरे परिवार में बहुत ज़रूरी होता है। सुंडल हम बीज धान्य से प्रेशर कुकर में बनाते हैं, लेकिन हर दिन विभिन्न मिठाई बनाते हैं I

मंदिर

मंदिरों में भी नवरात्रि में गोलू बनाते है. और हम उस गोलू को देखने जाते हैं। मंदिर बहुत अच्छे से सजे होते है। मंदिर मे पंडित भगवान को फल ओर फूल से सजाते हैं! वह देखकर मुझे बहुत

खुशी होती है। मंदिर में हर दिन अलग-अलग तरह से सजाते हैं I मंदिर में कुछ औरतें विलकु पूजा (दिया की पूजा) करती हैं । कभी-कभी मंदिर में कुछ मेला लगता है उसे "तिरुविला" कहा जाता है I

-ऐश्वर्या नागराजन

रावण का दहन

दशहरा एक त्योहार है जो हर साल नवरात्रि के अंत में मनाया जाता है। इस दिन राम ने रावण को हराया था। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत है। दशहरा को दक्षिणी भारत में वियादसामी के नाम से भी जाना जाता है। दशहरा पूरे भारत में कई अन्य कारणों से मनाया जाता है, लेकिन ये मुख्य कारण हैं।

रामलीला के प्रदर्शनों द्वारा दशहरा मनाया जाता है। इस त्योहार के लिए कई मिठाइयाँ भी तैयार की जाती हैं। दशहरा एक महत्वपूर्ण त्योहार है, तो इस दिन सभी लोग को काम या शिक्षा से छुट्टी मिलती है। दिवाली से 20 दिन पहले दशहरा आता है। दशहरे पर देश भर में रावण के पुतले जलाए जाते हैं। दशहरे के दिन सभी समुदाय इकट्ठा होते हैं और रामलीला की आग पर और रावण की मूर्ति को जलाकर उत्सव मनाते हैं ।

मेरे घर में दशहरे पर बहुत सी मिठाइयाँ बनती हैं। साथ ही रावण का एक पुतला जलाया जाता है। रावण की मूर्ति के 10 सिर हैं। इस छुट्टी पर हम बुराई पर अच्छाई की जीत का जश्न मनाते हैं।

-विहान जैन

गणेश चतुर्थी - मेरा मन पसंद उत्सव

गणेश चतुर्थी हिन्दुओं का एक महत्वपूर्ण त्योहार है।

यह त्योहार पूरे भारत में धूमधाम से मनाया जाता है। यह त्योहार अगस्त या सितंबर के महीने में मनाया जाता है। यह त्योहार भगवान गणेश के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। गणेश चतुर्थी पर, लोग गणेश जी की मूर्ति खरीद कर लाते हैं और उन्हें खुशी से सजाए गए तम्बू संरचनाओं में रखते हैं । लोग हर दिन मोदक बनाकर गणेश जी की मूर्ति को अर्पित करते हैं और गणेश जी की पूजा करते हैं । गुड़, नारियल, गेहूं के आटे और चावल से बने हुए मोदक भगवान गणेश जी का पसंदिता भोजन माना जाता है। गणेश चतुर्थी १० दिनों तक चलने वाला त्योहार है। ११वें दिन में लोग नाचते, गाते हैं और खूब मस्ती करते हैं। गणेश जी की आरती करने के बाद, गणेश जी की मूर्ति का समुद्र में विसर्जन करते हैं ।

हर साल गणेश चतुर्थी के पहले दिन, मैं, पापा, माँ और भाई सुबह उठकर नहाते हैं और माता-पिता गणेश जी की मूर्ति खरीदने जाते हैं । खरीदने के पशचात पापा और भाई गणेश जी की आखों पर एक सफेद कपड़ा बांधते है और उस समय में, और माता-पिता पूजा की जगह को फूल और फलों से सजाते है।

मेरी माँ ने रसोई घर को सजाया

पापा और भाई गणेश जी की मूर्ति लेकर घर आते वक़्त जोर-जोर से "गणपति बप्पा मोरिया, का नारे लगते हैं | जब पापा और भाई गणेश जी की मूर्ति के साथ घर पहुंचते है, तब माँ घर के बहार पापा ,भाई और गणेश जी की मूर्ति की आरती उतारती हैं । हम सब गणेश जी और माँ पार्वती का घर में स्वागत करते है। हम गणेश जी की मूर्ति को सजी हुई हुए जगह पर रख देते है और सफ़ेद कपड़े को उतार देते हैं । उसके बाद, माँ अपने दोस्तों, पड़ोसियों और मेरे दोस्तों को पूजा करने के लिए घर पर बुलाती है और हम सब साथ मिलकर भगवन गणेश जी की पूजा करते हैं ।

शाम को मेरा परिवार पास वाले बड़े मंदिर में पूजा कार्यक्रम के लिए जाते है। वहाँ बहुत सारे लोग और मेरे दोस्त बड़े गणेश जी (मंदिर की मूर्ति) की पूजा करने आते हैं । वह गणेश जी की आरती "सुख करता दुख हरता" करते हैं और पूजा का कार्यक्रम शुरू करते हैं । आरती होने के बाद, सब प्रसाद खाते हैं। उसके बाद, हम घर लौट जाते हैं। अगले दिन मैं और माँ सुबह उठकर स्वादिष्ट मोदक बनाते हैं और

उसके साथ-साथ अन्य भोजन भी बनाते है जैसे की पूरण पोली, खीर, बेसन के लड्डू, गुलाब जामुन और चावल और अपने दोस्तों और पड़ोसिओं के साथ गणेश जी की पूजा करते हैं और प्रसाद बांटते हैं। ये हम सात दिन तक करते हैं।

गणेश चतुर्थी के आखिरी दिन को शाम ७ बजे मेरा परिवार गणेश जी की पूजा करके उनका समुद्र में विसर्जन करते हैं। विसर्जन के बाद, हम मंदिर दर्शन करने जाते है। वहाँ एक विशाल गणेश भगवान की मूर्ति को गाड़ी में बैठाते हैं। वहाँ बहुत सारे लोग जमा होते हैं | संगीत बजाने वाला गाड़ी के पीछे बैठ कर गाना बजाते हैं और हम नाचते हुए उस गाड़ी के पीछे-पीछे चलते हैं। यह जुलूस पड़ोस के अंत में पहुंच कर खत्म हूँ जाता है और कुछ चुने हुए लोग गणेश जी का विसर्जन करने के लिए समुद्र जाते हैं।

गणपति विसर्जन

गणपति बप्पा मोरिया, मंगल मूर्ति मोरया!

होली भी मेरा मन पसंद उत्सव है क्योंकि होली मेरे जन्मदिन में मनाया गया है।

- **मृदुला पीलामणि**

संपादक - आयुष बोबर, शरभ ओझा

Marlboro Hindi School Important Dates 2021

Hindi Kavita competition Part 1	:February 20th
Hindi Kavita competition Part 2	:February 27th
Holi Program	:April 17th
Finals & Makeup	:June 5th & 12th
End of the year Program	:June 19th